18.47 hrs.

HALF-AN-HOUR DISCUSSION

NEGOTIATIONS FOR RETURN OF SOVIET WHEAT LOAN

श्री यादवेन्द्र दत्त (जौनपुर) : सभापति महोदय, मैं आपका आभारी हूं कि आप ने मुझे इस प्रश्न के बारे में आधे घंटे की चर्चा को उठाने का अवसर दिया । यह प्रश्न इस बात से सम्बन्धित है कि रूस को 28,000 टन गेहूं अधिक क्यों दिया गया । मंत्री महोदय ने जो उत्तर दिया है, वह स्पष्ट नहीं है ।

प्रश्न यह उठता है कि आरिजिनल एग्रीमेंट में कहीं एक्स्ट्रा व्हीट और प्रोटीन कनटेंट की बात नहीं थी । एग्रीमेंट में यह कहा गया था कि या तो व्हीट दी जायेगी, या उस के बदले में और कामोडिटीज दी जायेंगी । रूस सरकार के बड़े बड़े विशेषज्ञ यहां आये और उन्होंने यह सर्टिफिकेट भी दे दिया कि यहां का गेहूं ठीक ढंग से रखा गया है । फिर यकायक भगवान जाने क्या जादू हुआ कि रशा ने अपना स्टेंड बदल दिया और कहा कि इस गेहूं में व्हीट प्रोटीन की कमी है । पहले तो यह भारतीय किसान का सब से बड़ा अपमान है और मुझे आश्चर्य है कि इस सरकार ने कैसे इस को बर्दाश्त कर लिया । मैं समझता हूं कि हम बहुत कुछ बर्दाश्त करने के आदी हैं, इस लिए इसे भी बर्दाश्त कर लिया ।

इसी सरकार के आफिशल पब्लिकेशन "ग्रेन आफ व्हीट" में बताया गया है कि डा० पिंगले ने 1975-76 में जो स्टडी की थी, उस में कहा गया है कि कल्याण सोना में 9.97 से 13.90 परसेंट प्रोटीन रहती है । उन्होंने कहा है कि :

Several of the modern commercially grown Indian wheat varieties like Arjun, Pratap, Sharabati, Sonar, etc. their protein potential is more than 12 per cent.

बाकी जो इन्होंने प्रोटीन कन्टेंन्ट्स का कम्पेरिजन किया है अमेरिका के और आस्ट्रेलिया के व्हीट से, उस के भी आंकड़ें मैं दो मिनट में पढ़ देता हूं । हिन्दुस्तान के साधारण व्हीट में प्रोटीन कन्टेंट्स हैं 10.70 परसेंट और आस्ट्रेलियन वेराइटी उसी के बराबर की 10.70 पर है और जो यह कहा जाता है कि अमेरिकन रेड व्हीट उन्होंने चाहा तो हमारे कल्याण सोने का प्रोटीन कन्टेंट है 13.22 से 13.90 परसेंट । यह सारे अमेरिकन रेड व्हीट और आस्ट्रेलियन व्हीट से अधिक प्रोटीन कन्टेट हैं । तो इन्होंने सहसा यह स्टेंड क्यों स्वीकार कर लिया प्रोटीन का और जब प्रोटीन का स्वीकार किया गया तो उन्होंने किस के आधार पर यह मान लिया कि इन का गेहूं रूस के गेहूं से या अमेरिकन या आस्ट्रेलियन गेहूं से प्रोटीन में कम है । जब कि इन्हीं के डा० पिंगले और दूसरे साइंटिस्ट्स ने कहा है कि हमारा प्रोटीन कन्टेंट अधिक है ?

तीसरा प्रश्न मैं यह उठाना चाहता हूं कि यह एक अन्तर्राष्ट्रीय नियम है जब कोई देश बाहर से सामान लेता है तो साधारणत: 50 परसेंट सामान उस के जहाजों पर लद कर आता है, इन्होंने यह शर्त क्यों स्वीकार कर ली कि सारा व्हीट रूस के जहाज से लद कर जाएगा जब कि यह 50 प्रतिशत हमारे जहाज से जाना चाहिए था और 50 प्रतिशत वें अपने जहाज से ले जाते ? 28 हजार टन इस प्रोटीन के गलत बहाने पर जो इन्होंने रूस को गेंहूं दिया है एक ओर जहां हमारे किसान का उस में अपमान किया है और एक प्रकार से उन्होंने साबित कर लिया है कि हिन्दुस्तान की ऐंग्रीकल्चर का फेंल्योर हो गया वहां इन्होंने देश को 28 हजार टन का घाटा दिया है ।

मैं ज्यादा समय नहीं लेना चाहता, मैंने प्रश्न के रूप में पूछ लिया और मैं चाहूंगा कि माननीय राज्य कृषि मंत्री भानु बाबू जो बहुत

[श्री यादवेन्द्र दत्त]

एक्सपर्ट हैं गेहूं और चीनी के विषय में वह बहुत स्पष्ट मेरे प्रश्नों का उत्तर देंगे अन्यथा यह माना जाएगा कि

some other consideration has forced them to bow down to this pressure.

कृषि और सिंचाई मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री भानु प्रताप सिंह) : (श्रीमन्, मुझे इस बात का अफसोस है कि इस प्रश्न को इस प्रकार से उठाया गया है जैसे कि सोवियत यूनियन ने हम लोगों को धोखा दिया हो और हम लोग धोखे में आ गए हों। ऐसी बात बिल्कुल नहीं है बल्कि मैं तो यहां तक कहूंगा कि इस गेहूं सौदे में प्रारम्भ से ले कर अन्त तक सोवियत यूनियन का जो व्यवहार रहा है वह एक अच्छे पड़ौसी का व्यवहार रहा है। उस की प्रशंसा की जानी चाहिए थी। मुझे दुख है कि इस प्रकार से आरोप लगाया जाता है कि उन्होंने हम को धोखा देने की कोशिश की।

सब से पहले तो मैं उस एग्रीमेंट की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूं जिस के तहत यह गेहूं आया था। उस ऐग्रीमेंट में लिखा गया था कि हम गेहूं लौटाएंगे और वह उसी क्वालिटी का होगा या उस से सुपीरियर क्वालिटी का होगा जो दिया गया है। मैं इन बातों की ओर भी ध्यान दिलाना चाहूंगा कि जिस वक्त यह गेहूं दिया गया उस समय न केवल इस देश में बल्कि संसार में गेहूं की कमी थी, मूल्य बहुत बढ़े हुए थे और उस परिस्थिति में जब यहां भूखमरी का सामना करने की स्थिति थी, मूल्य बहुत ज्यादा थे, उस समय उन्होंने गेहूं का उधार दिया और यह नहीं कहा कि हम को इस पर कुछ सूद चाहिए। अगर चाहते तो कह सकते थे। हम को वह गेहूं दो वर्ष बाद लौटा देना था शर्त के मुताबिक। लेकिन दो वर्ष बाद जब हम उस स्थिति में नहीं रहे कि हम उन के गेहूं को लौटा सकें तो हमारी सरकार ने फिर कहा कि हम गेहूं के बजाय आप को कुछ नकद देंगे और उस नकद से आप भारत में जो कुछ चाहें खरीद कर ले जा सकते हैं। बाद में सन् 1976 में यह समझौता हुआ लेकिन 77 में जब हम इस स्थिति में पहुंच गए कि हम उन के गेहूं को लौटा सकते थे तब फिर हम ने उन से कहा कि हम गेहूं लौटाना चाहते हैं और नकद की बात को खत्म कीजिए तो उस को भी उन्होंने मान लिया। जिस समय यह गेहूं लिया गया था उस समय क्या मूल्य थे अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में, इस ओर भी मैं ध्यान दिलाना चाहता हूं। यह अक्तूबर से नवम्बर 73 के तीन किस्म के गेहूं के भाव हैं---कैनेडियन, अमेरिकन और आस्ट्रेलियन। कनाडा का मूल्य था 210 डालर प्रति टन और जो उससे भी बेहतर किस्म का था जिसमें 13.5 प्रतिशत प्रोटीन कन्टेन्ट थे उसका मूल्य था 212 डालर प्रति टन। और जो अमेरीका का था उसका मूल्य था 181 डालर प्रति टन। आस्ट्रेलिया का 200 डालर प्रति टन। अब जब हमने लौटाया है उस गेहूं को, तो तब के मूल्य को भी हमें देखना चाहिए। शायद 55 फीसदी से कुछ ज्यादा लौटाया है और अब मूल्य घटकर 50.55 फीसदी रह गए हैं।

प्रश्न यह उठता है कि यह ज्यादा क्यों दिया गया। एक बात मैं प्रारम्भ में बता देना चाहता हूं कि संसार में जितने गेहूं बिकते हैं उसमें सिर्फ एक कनाडा का गेहूं है जो इस गारन्टी के साथ बिकता है कि इसमें इतने से कम प्रोटीन नहीं होगी। तुलना सोवियत यूनियन, अमरीका या आस्ट्रेलिया के गेहूं से नहीं करनी है। हम ने जो गेहूं प्राप्त किया उसमें कुछ तो नकदी लौटा दिया और जो शेष रह गया वह सोवियत यूनियन का 7.76 लाख टन, आस्ट्रेलिया का 3.97 टन, कनाडा का 2.98 लाख टन जिसके मुकाबले में हमने आस्ट्रेलिया का 7.5 लाख टन उन्हें लौटाया, अमरीका का 3.5 लाख टन लौटाया जबकि उन देशों का 11.73 लाख टन था। कनाडा का हम कुछ भी नहीं लौटा सके। कनाडा का गेहूं, जैसा मैं पहले कह चुका हूं,

संसार में उसकी कीमत सबमे ज्यादा रहती है। जो आंकड़े मेरे सामने हैं उनके अनुसार अमरीका का गेहूं 181 डालर प्रति टन था। तो कनाडा का 210 डालर प्रति टन था और आज भी जब अमरीका का गेहूं 96–97 डालर प्रति टन है, तो कनाडा का 110 डालर प्रति टन है।

यह मूल्य इस लिए ज्यादा है कि उन की गारन्टी प्रोटीन कन्टेन्ट की होती है। उन की दो किस्म की गेहूं हैं—एक जिस को सैकण्ड ग्रेड कहते हैं, उस में प्रोटीन कन्टेन्ट साढ़े-बारह प्रतिशत होता है और दूसरा जिसे फर्स्ट ग्रेड कहते हैं उस में साढ़े-तेरह प्रतिशत प्रोटीन-कन्टेन्ट की गारन्टी है। अब प्रश्न उठता है कि भारतीय गेहूं में क्या है? मेरे सामने दो पुस्तिकायें हैं—एक फर्टिलाइजर एसोसिएशन आफ इण्डिया की, जिस में जो आंकड़े दिए हुए है उन के अनुसार भी हमारे गेहूं में प्रोटीन-कन्टेन्ट औसतन 10 फीसदी से ज्यादा नहीं हैं। एक दूसरी पुस्तक भी है जिस का जिक्र माननीय सदस्य ने किया है —उस में 8.80 से लेकर 13 प्रतिशत तक, जैसा कि वे कहते हैं, प्रोटीन कन्टेन्ट है। इस सम्बन्ध में मैं निवेदन करना चाहता हूं कि अपने देश में एफ सी० आई० के पास जो स्टाक है, वह किसी खास प्रोटीन-कन्टेन्ट का नहीं है। शर्बती-सोनारा का जिक्र किया गया। माननीय सदस्य यदि खेती करते होंगे तो उन्हें मालूम होगा कि इस की खेती बहुत कम हो गई है। हमारे पास जो स्टाक है वह कल्याण-सोना व दूसरे किस्म के गेहूं का है, जिस में प्रोटीन-कन्टेन्ट की कोई कंसिसटेंसी नहीं है। प्रोटीन कन्टेन्ट इस बात पर भी निर्भर करता है कि कितना उस में उर्वरक दिया गया और कितनी सिंचाई हुई। अपने देश में खेती की परिस्थितियां इतनी भिन्न हैं कि प्रोटीन कन्टेट की कोई गारन्टी नहीं की जा सकती, जब कि हमारे गेहूं वापस करने में प्रोटीन कन्टेन्ट्स गारन्टीड थे।

इन परिस्थितियों में आप देखें—हमेशा 12 डालर, जो कि 10 परसेंट मे ज्यादा है, कैनेडियन व्हीट का मूल्य रहा है। इसलिए अगर हिसाब लगाया जाये तो हम ने जो लौटाया है —वह साढ़े-सात प्रतिशत अधिक लौटाया है . . . .

19 hrs.

श्री यादवेन्द्र दत : कितना हुआ ?

श्री भानु प्रताप सिंह : 28 हजार टन था, जो वाजिब था, उन को मिलना उचित था।

SHRI YADVENDRA DUTT: The Minister has just said that what we have returned was fair and right—and which they should have got. He has gone round my question. I am sorry that he has taken my answers to mean something which they really did not mean. I regret to say that he has gone more into bracing, than coming to the fact. If that was so the question is this: the first stand of the Russian Government was that our wheat was good; then how did the protein-content question came in; and when it came in, did you have your wheat tested by a standard international authority? In that case, you could have said that your wheat was less in protein-content, or that it was not.

श्री भानु प्रताप सिंह : श्रीमन्, दो प्रश्न उठाये गये हैं—एक तो यह कि जब रशियन्ज ने हमारे गेहूं को अच्छा बतलाया था, तो हम ने इतना क्यों दिया। अच्छा बतलाने का उन का तात्पर्य केवल इतना था कि वह सड़ा नहीं है, घुना नहीं है, खाने योग्य है। यह नहीं था कि वह दुनिया में सबसे ज्यादा प्रोटीन-कन्टेन्ट वाला गेहूं था। दूसरा प्रश्न था कि टेस्ट क्यों नहीं कराया। उस के सब

[श्री भानु प्रताप सिंह]

आंकड़े मौजूद हैं, हम जानते हैं कि हमारा गेहूं प्रोटीन-कन्टेन्ट में कनाडा के गेहूं की तुलना में, केवल हमारा ही नहीं, संसार भर के सभी देशों के गेहूं कैनेडियन गेहूं की तुलना में, निम्न-कोटि के हैं।

MR. CHAIRMAN: Mr Chandrappan is not here. The House now stands adjourned.

19.02 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Tuesday, December 13, 1977 Agrahayana 22, 1899 (Saka).

GMGIPMRND—PMR—2973LS—GC4537—18 1-78—900.